गुप्तोत्तर कालीन शासक एवं महत्वपूर्ण लेख

सार्वभौमिक गुप्त सत्ता के पश्चात विभिन्न शक्तियों का उदय हुआ। वल्लभी के मैत्रगण जोकि गुप्त शासकों के कर्मचारी थे, मौखरी तथा कुछ अन्य गणों ने अपना प्रभुत्व भारत के विभिन्न स्थानों पर स्थापित किया। गुप्त नाम के कुछ शासकों का भी उदय हुआ जिन्हें गुप्तोत्तर शासक कहा जाता है। कुछ विद्वानों ने उनके 'गुप्त' नाम के आधार पर उनका सम्बन्ध सार्वभौमिक गुप्त शासकों से प्रदर्शित करने का प्रयत्न किया है किन्तु इस विषय में निश्चित रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता है। ये गुप्त शासक निश्चित रूप से न तो मालवा और न मगध से ही सम्बन्धित किए जा सकते हैं। आदित्यसेन का अफसड़ प्रस्तर लेख उनके इतिहास का प्रमुख साधन है।

आदित्यसेन का अफसड़ प्रस्तर लेखः

अफसड़ प्रस्तर लेख बिहार प्रदेश के गया जिले की नवादा तहसील के अफसड़ ग्राम में प्राप्त हुआ है। अफसड़ ग्राम को जाफरपुर ग्राम के नाम से भी जाना जाता है। लेख की भाषा संस्कृत तथा लिपि उत्तर भारतीय ब्राह्मी है। लेख में प्रयुक्त अक्षरों को कुटिल अक्षर कहा गया है।

लेख मगध नरेश, उसकी रानी कोणदेवी तथा माता श्रीमती द्वारा किए गए सद्कार्यों का उल्लेख करता है। लेख से ज्ञात होता है कि नरेश ने विष्णु मंदिर का निर्माण कराया था (तदेनं भवनोत्तमं क्षितिभुजा विष्णोःकृते कारितं)। इससे उसके वैष्णव होने पर प्रकाश पड़ता है। उसकी माँ द्वारा एक मठ के निर्माण तथा ब्राह्मणों को दान देने का उल्लेख मिलता है (तज्जनन्या महादेव्या श्रीमत्या कारितो मठः)। लेख में राजा रानी द्वारा बनवाए गए तड़ाग का भी उल्लेख प्राप्त होता है।

आदित्यसेन के अफसड़ शिला लेख से प्रारम्भिक आठ गुप्त शासकों के विषय में ज्ञान प्राप्त होता है जिनके नाम इस प्रकार हैं:

कृष्णगुप्त
↓
हर्षगुप्त
↓
जीवितगुप्त

Scanned with CamScanner

↓
कुमारगुप्त
↓
दामोदरगुप्त
↓
महासेनगुप्त
↓
माधवगुप्त
↓
आदित्यसेन

वंशावली के अतिरिक्त लेख में आदित्यसेन के कार्यकरण का उल्लेख प्राप्त होता है जिसने सार्वभौमिक स्तर प्राप्त कर लिया था। यद्यपि यह लेख तिथिबद्ध नहीं है किन्तु वंशावली के चौथे शासक कुमारगुप्त को मौखरी शासक ईशानवर्मन् का समकालीन शासक बतलाया गया है जिसके आधार पर लेख की तिथि का निर्धारण हो सकता है। लेख से परवर्ती गुप्त शासकों एवं मौखरी राजवंश के राजनैतिक सम्बन्ध पर प्रकाश पड़ता है। अभिलेख की पंक्ति–7 एवं 8 से ज्ञात होता है कि कुमारगुप्त प्रयाग गए तथा वहाँ उपलों से प्रज्जवलित अग्नि में निमग्न हो गए (शौर्यसत्यव्रतधरो यः प्रयागगतो धने अम्भसीव करीषग्नौ मग्नः स पुष्पपूजयतिः'।।) डॉ० फ्लीट का कथन है कि ये पंक्तियाँ यह सिद्ध करती हैं कि कुमारगुप्त का अन्तिम संस्कार प्रयाग में किया गया। किन्तु यह धारणा, यह अर्थ उपयुक्त नहीं प्रतीत होता है। प्राचीन भारतीय इतिहास में कई ऐसे उल्लेख हैं जिनसे यह ज्ञात होता है कि मोक्षप्राप्ति के लिए, धार्मिक उन्माद से प्रेरित होकर अग्नि, विष, जल तथा उपवास–चार साधनों का प्रयोग किया गया है। अतः ये पंक्तियाँ यह निर्दिष्ट करतीं हैं कि वह जीवित ही चिता में जाकर बैठ गया और उसने स्वयं को अग्नि की लपटों को समर्पित कर दिया।

आदित्यसेन के इस लेख से यह भी ज्ञात होता है कि आदित्यसेन का पिता माधवगुप्त कन्नौज नरेश महाराजाधिराज हर्षवर्द्धन का मित्र था ('श्री हर्षदेवनिजसंगमवंछयाच')। हर्षचरित भी इस तथ्य पर प्रकाश डालता है। हर्षचरित में कहा गया है: "विनीतौ विक्रान्तावभिरूपौ मालवराजपुत्रौ भ्रातरौ भुजाविवमे शरीरादव्यतिरिक्त–कुमारगुप्त–माधवगुप्त–नाम्ना।"

उत्तरोत्तर कालीन इन गुप्त शासकों के शासन की तिथि उपरोक्त दिए गए तथ्यों के आधार पर निर्धारित की जा सकती है तथा इन उद्धरणों से उनके समकालीन शासकों से सम्बन्धों का भी बोध होता है।

Scanned with CamScanner

सार्वभौमिक गुप्त शासकों के साथ इन परवर्ती गुप्त शासकों का सम्बन्ध निश्चित रूप से स्थापित नहीं किया जा सकता है क्योंकि वे स्वयं को सद्वंश से सम्बन्धित बतलाते हैं। सद्वंश गुप्तवंश भी हो सकता है, या नहीं भी हो सकता है। यदि वे गुप्त शासकों से सम्बन्धित होते तो वे इसका उल्लेख कहीं न कहीं अवश्य करते, जो कहीं भी प्राप्त नहीं होता है। वंशावली के इन गुप्त शासकों के विषय में जो सूचना उपलब्ध है उसका विवेचन आवश्यक है:

कृष्णगुप्त प्रथम : को एक महान शत्रु पर विजयी होने का श्रेय दिया गया जिसके विषय में ज्ञात नहीं है। कुछ विद्वान इस शत्रु को यशोधर्मन् मानते हैं किन्तु इस मत को स्वीकार करना सम्भव नहीं प्रतीत होता है क्योंकि कोई भी ऐसे प्रमाण प्राप्त नहीं हैं जो इस मत की पुष्टि करें।

हर्षगुप्त : को हिमालय तथा समुद्र के किनारे निवसित व्यक्तियों का ज्वर कहा गया है। समुद्र के किनारे के शत्रुओं की पहचान विद्वानों ने गौड़ों से की है किन्तु हिमालय के शत्रु कौन थे, यह अभी तक निश्चित नहीं हो सका है।

जीवितगुप्त : के विषय में कोई विशेष सूचना नहीं प्राप्त होती है। उसको भी किसी बड़े शत्रु पर विजय का श्रेय दिया गया है।

कुमारगुप्त : के शत्रु का वर्णन स्पष्ट रूप में प्राप्त होता है। कुमारगुप्त को मन्दर एवं उसकी शत्रु सेना को समुद्र की समता दी गई है जिसके मन्थन के फलस्वरूप उसे लक्ष्मी प्राप्त हुई (भीमः श्रीशानवम्म–क्षितिपतिशशिनः सैन्यदुग्धोदसिन्धुर्लक्ष्मी सम्प्राप्ति–हेतुः सपदिविमथितो मन्दरीभूय येन।) यहाँ पर ईशानवर्मन् की जो सम्भवतः मौखरी राजा है, सिन्धुरूपी सेना को उसे मंथन करनेवाला कहा गया है जिसके फलस्वरूप उसे लक्ष्मी की प्राप्त हुई। उसे राजाओं के मध्य चन्द्र कहा गया है।

ईशानवर्मन् की तिथि 554 ई० है। अतः इस समकालीनता के आधार पर इस राजा की तिथि भी लगभग 554 ई० ही तय की गई है। प्रत्येक शासक का शासनकाल 20 वर्ष मानते हुए हम इस वंश की उत्पत्ति पांचवीं शताब्दी ई० के उत्तरार्ध या छठी शताब्दी ई० के पूर्वार्द्ध में मान सकते हैं।

दामोदरगुप्त : उसके समय में भी मौखरियों के साथ संघर्ष कायम रहा। इस मौखरी शासक ने हूणों को पराजित किया था। यह मौखरी शासक कौन था? अब भी अनिश्चित है। वह या तो ईशानवर्मन् या उसका पुत्र सूर्यवर्मन् या शिववर्मन् हो सकता है। उसके द्वारा दिए गए ब्राह्मणों के दान का उल्लेख प्राप्त होता है।

महासेनगुप्त : लेख में महासेनगुप्त तथा सुस्थितवर्मन् के मध्य युद्ध का

Scanned with CamScanner

उल्लेख प्राप्त होता है जिसके विजय की प्रसिद्धि लौहित्य तक फैल गई। लौहित्य की पहचान ब्रह्मपुत्र घाटी से की गई है। डॉ० मुकर्जी पहले राजाओं के साथ हुए युद्धों के, एवं वर्मन् नाम के आधार पर इसे मौखरी शासक मानते हैं। किसी भी मौखरी लेख में सुस्थितवर्मन् का नाम नहीं प्राप्त होता है। दूसरे यदि वह मौखरी शासक है तो इस विजय की प्रसिद्धि को आसाम में क्यों व्याप्त बताया गया है? भास्करवर्मन् के निधानपुर लेख में भी सुस्थितवर्मन् का उल्लेख हुआ है।

माधवगुप्त : अभिलेख कहता है कि वह (माधवगुप्त) हर्ष के साथ रहने के लिए इच्छुक है (हर्षदेव निज–संगम–बांछया च)। बाण से ज्ञात होता है कि मालव के राजा ने अपने दो पुत्र कुमारगुप्त एवं माधवगुप्त को हर्ष के साथ रहने के लिए नियुक्त किया था। कुमारगुप्त के विषय में कोई विशेष सूचना नहीं प्राप्त होती है, किन्तु माधवगुप्त यहाँ उल्लेखनीय है। उसके साथ साथ देवगुप्त भी सम्मुख आता है। मधुबन एवं बांसखेड़ा अभिलेखों में देवगुप्त को राज्यवर्धन का शत्रु बतलाया गया है। वह मालवराज का तृतीय पुत्र रहा होगा। इस मालव शासक को गृहवर्मन् की मृत्यु एवं राज्यश्री ग्रहण का भी श्रेय दिया जाता है। इस पर राज्यवर्धन ने उस पर आक्रमण कर उसे पराजित किया था। बाण उसे मालव का शासक कहता है और लेख माधवगुप्त को मगध से सम्बन्धित करता है। यदि ये दोनों माधवगुप्त एक हैं तो हमें उसे मालवा का शासक मानना चाहिए। डॉ० मुकर्जी का कथन है कि बाद में हर्ष ने माधवगुप्त को मगध के लिए प्रस्थान करने को कहा था और यहीं उसने पूर्णतः स्थापित होकर लेख भी उत्कीर्ण कराए।

यह समस्या इस प्रकार से सुलझाई जा सकती है : अपने पिता महासेनगुप्त से देवगुप्त ने राज्याधिकार प्राप्त किया किन्तु जब प्रभाकरवर्धन ने अपनी पुत्री का विवाह गृहवर्मन् के साथ किया, उस समय उसने गौड़ शासक शशांक से मित्रता कर ली। मालव शासक ने गृहवर्मन् को युद्ध में पराजित कर उसे मृत्यु के घाट उतार दिया जिसका बदला राज्यवर्धन ने मालव शासक देवगुप्त को मार कर लिया। वह धोखे से गौड़ शासक द्वारा मारा गया। तब हर्ष ने माधवगुप्त को मगध का शासक बनाया।

आदित्यसेन : इन शासकों के पश्चात् आदित्यसेन ने एक सार्वभौमिक शासक के रूप में शासन किया जिसका उल्लेख उसके लेख में स्पष्ट रूप में प्राप्त होता है, क्योंकि हर्ष की मृत्यु के पश्चात् उसका सम्राज्य छिन्न–भिन्न हो गया था।

Scanned with CamScanner